पाठ 12

हमारे गौरव–I

नागार्जुन

प्राचीन भारत में नागार्जुन एक प्रसिद्ध रसायन शास्त्री थे। वे जन्म से ही प्रतिभाशाली थे। उनका जन्म छत्तीसगढ़ अंचल के बालूका ग्राम में हुआ। उन्होंने वेद, वेदांगों का अध्ययन शीघ्र ही पूर्ण कर लिया था।

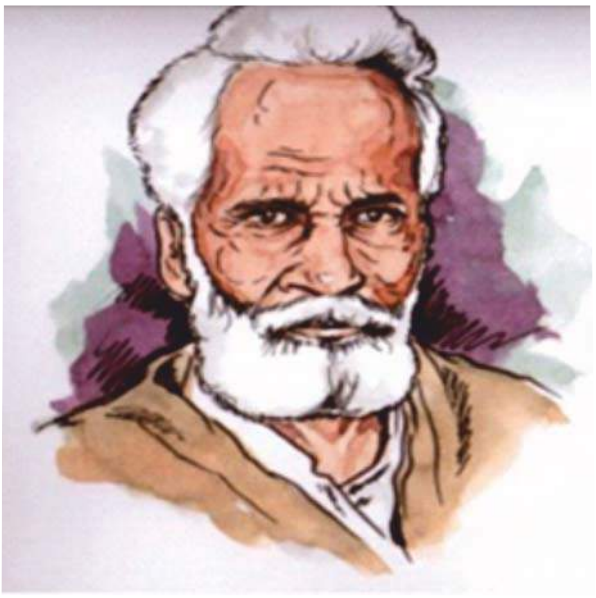

चित्र 12.1 नागार्जुन

कालान्तर में नागार्जुन ने बौद्ध दर्शन का अध्ययन किया व बौद्धमत में दीक्षित हो गये। रसायन शास्त्र के क्षेत्र में 'रस हृदय' नामक ग्रंथ में धातुकर्म पर कार्य का विवरण मिलता है। उन्होंने पारे को शोधकर उसका भष्म बनाने की विधि भी ज्ञात की। चिकित्सा के क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय हैं। उन्होंने इस क्षेत्र में अनेक ग्रंथ लिखे है।

नागार्जुन एक महान दार्शनिक थे। उनका दर्शन 'शून्यवाद' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय के 'माध्यमिक सिद्धान्त' को प्रारम्भ करने का श्रेय भी इन्हें ही है। उन्होंने वैदिक व बौद्ध दर्शन में समन्वय स्थापित कर भारत की राष्ट्रीय एकात्मकता में महान योगदान दिया था। आन्ध्रप्रदेश में कृष्णा नदी पर बने विशाल बांध का नामकरण उनकी स्मृति में 'नागार्जुन सागर' किया गया है।

चर्चा कीजिए

- नागार्जुन की जीवनी से हमें क्या सीख मिलती है?

जगदीश चंद्र बसु

भारत के एक महान वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु थे। इन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में रामायण एवं महाभारत का अध्ययन किया। वे अपनी पढ़ाई के साथ–साथ जिमनास्टिक तथा मुक्केबाजी का शौक भी रखते थे। विद्यालय समय में वे अपनी बचत व रिक्त समय को पेड़–पौधों एवं जीवों को पालने और संभालने में लगाते थे।

उन्होंने भौतिकी और जीव विज्ञान दोनों में अनेक आविष्कार किए। उन्होनें बिना तार संबंध जोड़े 23 मीटर दूरी पर विद्युत घंटी बनाकर तथा पिस्तौल चलाकर विद्युत तरंगों के प्रवाह का प्रदर्शन किया। इनकी खोज मार्कोनी और अन्य वैज्ञानिकों से अधिक उन्नत थी परंतु उन्होंने इनका पेटेंट नहीं कराया। इनकी मान्यता थी कि वैज्ञानिक खोजें सार्वजनिक संपत्ति है। उस पर किसी का एकाधिकार उचित नहीं। वास्तव में भारतीय सोच सदा यही रही है।

चित्र 12.2 जगदीश चंद्र बसु

उन्होंने प्रदर्शित किया कि पेड़–पौधे संवेदनशील होते हैं। वे भी हमारी तरह दुःख एवं प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। उन्होंने समाज के सहयोग से ''बसु विज्ञान मंदिर'' की स्थापना की।

चर्चा कीजिए और लिखिए

- बिना तार के कौन–कौन से यंत्र चलते हैं?

  _____

- पेटेंट क्या होता है?

  _____

- जगदीश चंद्र बसु ने अपने आविष्कारों का पेटेंट क्यों नहीं कराया?

  _____

  _____

शिक्षक निर्देश :– बच्चों को आविष्कार एवं पेटेंट के बारे में विस्तार से समझाएँ।

भगिनी निवेदिता

भगिनी निवेदिता इंग्लैंड की रहने वाली थी। उनका नाम मार्गरेट नोबल था। उन्होंने आजीवन अविवाहित रहकर सेवा कार्य अपनाया था। वे अन्य लोगों के दोहरे चरित्र से दुःखी थी। इसी समय वे स्वामी विवेकानंद के व्याख्यान से प्रभावित हुई और उन्होंने स्वामी जी को अपना गुरु मान लिया। स्वामी विवेकानंद ने ही उन्हें "निवेदिता" नाम दिया। वे मानव मात्र की सेवा को ही अपना धर्म समझती थी।

चित्र 12.3 भगिनी निवेदिता

कलकत्ता में फैले प्लेग के दौरान वे सफाई कार्य में जुट गई व रोगियों की सेवा की। उनसे प्रभावित होकर अनेक लोग आगे आए। बंगाल की भयंकर बाढ़ के समय भी उन्होंने अद्‌भुत कार्य किया। इससे प्रभावित होकर श्री रवींद्रनाथ ठाकुर ने उन्हें ''लोकमाता'' कहा।

सोचिए व लिखिए

- अपने आस–पास के उन लोगों के नाम लिखिए, जो बिना भेदभाव के लोगों की सेवा करते हैं।

  _____

  _____

- आप अपने विद्‌यालय में कौन–कौनसे सेवा कार्य करते हैं?

  _____

  _____

- यदि आपको विद्‌यालय से बाहर सेवा करने का अवसर मिले तो आप कौन–कौन से सेवा के कार्य करेंगे?

  _____

  _____

- भगिनी निवेदिता भारत क्यों आई थी?

  _____

  _____

महात्मा गाँधी

चित्र 12.3 महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी के जीवन पर बचपन से ही उनकी माँ के संस्कारों का गहरा प्रभाव पड़ा था। उनके द्वारा बचपन में देखे गए नाटक सत्यवादी हरिशचंद्र और श्रवण कुमार से प्रभावित होकर उन्होंने आजीवन सत्य का पालन व माता–पिता की सेवा का संकल्प लिया। वे रोज गीता का पाठ करते थे।

दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने गोरे और काले का भेद मिटाया। उन्होंने छुआछूत की कुप्रथा के विरुद्ध संघर्ष किया तथा हरिजनों के उद्धार के लिए काम किया। वे ग्राम स्वराज की स्थापना करना चाहते थे, साथ ही वे कुटीर उद्योग द्वारा गाँवों को स्वावलंबी बनाना चाहते थे। उन्होंने सत्याग्रह और अंहिसा को अपना शस्त्र बनाकर भारत को आजादी दिलवाई।

सोचिए और बताइए

- क्या आपने कोई सेवा कार्य करने का संकल्प लिया है?

  ____

- आपने कौन–कौनसे नाटक देखें है? तथा अपने जीवन में क्या सकंल्प लिया?

  ____

यह भी कीजिए

- पुस्तकालय से श्रवण कुमार की कहानी की पुस्तक ढूंढ कर पढ़िए।

बिरसा मुंडा

बिरसा मुंडा का जन्म छोटा नागपुर में हुआ। बचपन में वे बाँसुरी की मनमोहक ध्वनि से सबको मोहित कर लेते थे। उनके शिक्षक जयपाल नाग ने उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें जर्मन मिशन स्कूल में पढ़ाई की सलाह दी। शिक्षा ग्रहण करने के बाद वे श्री आनंद पांडे के संपर्क में आए। उनसे भारतीय संस्कृति के रहस्यों को जाना। उन्होंने रामायण, महाभारत, गीता व हितोपदेश का अध्ययन किया। उनकी ख्याति चारों ओर फैलने लगी। बिरसा मुंडा के प्रवचन सुनने दूर–दूर से लोग आते थे। किसी ने उनकी शिकायत अंग्रेजों से कर दी। उन पर राजद्रोह का आरोप लगाकर दो वर्ष के लिए कारावास की सजा सुनाई। वहीं से उनके मन में क्रांति का भाव आया। जेल से छूटकर वे एक महान क्रांतिकारी बने।

चित्र 12.5 बिरसा मुंडा

सोचिए व लिखिए

- आपके गाँव या शहर में प्रवचन देने कौन–कौन आते हैं?

  _____

- बिरसा मुंडा के मन में क्रान्ति का भाव क्यों आया होगा?

  _____

- आप अच्छे लोगों से क्या–क्या सीखते हैं?

  _____

  _____

हमने सीखा

- नागार्जुन एवं जगदीश चंद्र बसु का विज्ञान की प्रगति में अनूठा योगदान है।
- भगिनी निवेदिता ने विदेशी होते हुए भी मानव धर्म को सर्वोपरि मानकर भारत में जीवनपर्यंत समाज सेवा की।
- महात्मा गाँधी ने सत्य व अहिंसा की राह पर चलकर भारत को आजादी दिलवाई।
- बिरसा मुंडा वेदों के ज्ञाता और महान् क्रांतिकारी थे।

प्रेम, त्याग, शुचिता अपनाओ।
इस जीवन को सफल बनाओ।।